

## दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 23-10-2026

### विषय सूची

भारत-पोलैंड संबंध

भारत-इजराइल द्वारा द्विपक्षीय संबंधों और पश्चिम एशिया की स्थिति पर चर्चा

चीनी आयात में वृद्धि के बीच भारत के वस्त्र उद्योग का सुदृढीकरण

उत्सर्जन अंतराल रिपोर्ट, 2026

### संक्षिप्त समाचार

केरल के यहूदी समुदाय

काशी तमिल संगमम् (KTS 5.0)

प्रधानमंत्री सामाजिक सहायता योजना

शामोंडा वायरस

eMudhra द्वारा डिजिटल प्रमाणपत्र व्यवसाय से बाहर निकलने का निर्णय

PHP2Shell

रासायनिक हस्ताक्षर अथवा जैवचिह्न

सखारोव पुरस्कार, 2026

## भारत-पोलैंड संबंध

### संदर्भ

- पोलैंड के प्रधानमंत्री ने भारत की आधिकारिक यात्रा की।

### यात्रा के हालिया परिणाम

- **व्यापार लक्ष्य:** दोनों पक्षों ने वर्ष 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना करने पर सहमति व्यक्त की। वर्तमान में द्विपक्षीय व्यापार लगभग 6 अरब अमेरिकी डॉलर है। दोनों पक्षों ने भारत-यूरोपीय संघ (EU) मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के निष्कर्ष का स्वागत किया तथा इसके शीघ्र हस्ताक्षर, अनुसमर्थन और कार्यान्वयन का आह्वान किया।
- **रक्षा:** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पोलिश कंपनियों को भारत के साथ संयुक्त विकास और संयुक्त उत्पादन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया।
- **महत्वपूर्ण खनिज:** भूविज्ञान, खनन और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर वार्ता जारी है। दुर्लभ मृदा तत्वों के प्रसंस्करण और बैटरी पुनर्चक्रण को प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के रूप में चिह्नित किया गया।
- **प्रौद्योगिकी एवं नवाचार:** प्रधानमंत्री ने भारत-पोलैंड स्टार्टअप ब्रिज और प्रौद्योगिकी हैकथॉन की घोषणा की। दोनों देश कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), सेमीकंडक्टर और क्वांटम प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाओं का पता लगाएंगे।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** पोलैंड ने वर्ष 2028-29 के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) की अस्थायी सदस्यता हेतु भारत की उम्मीदवारी तथा सुधारित UNSC में स्थायी सदस्यता प्राप्त करने के भारत के प्रयासों के प्रति समर्थन व्यक्त किया।

### पोलैंड

- **भौगोलिक स्थिति:** पोलैंड मध्य यूरोप में स्थित एक देश है।
- **सीमावर्ती देश:** पोलैंड के सात पड़ोसी हैं—जर्मनी, स्लोवाकिया, चेक गणराज्य, लिथुआनिया, बेलारूस, यूक्रेन और रूस।
- **अंतरराष्ट्रीय सदस्यता:** यह उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (NATO) और यूरोपीय संघ (EU), दोनों का सदस्य है।
- **प्रमुख पर्वत शृंखलाएँ:** कार्पेथियन और सुडेटेन पर्वत शृंखलाएँ।
- **प्रमुख नदियाँ:** विस्तुला और ओडरा।



### भारत-पोलैंड संबंधों का अवलोकन

- **राजनयिक संबंध:** भारत और पोलैंड के बीच वर्ष 1954 में राजनयिक संबंध स्थापित हुए। दोनों देश उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद और नस्लवाद के विरोध जैसे साझा विचारों पर आधारित संबंध रखते हैं।
- **रणनीतिक साझेदारी:** वर्ष 2024 में भारत के प्रधानमंत्री की पोलैंड की आधिकारिक यात्रा के दौरान द्विपक्षीय संबंधों को रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक उन्नत किया गया।
  - ♦ इस साझेदारी को क्रियान्वित करने के लिए यात्रा के दौरान कार्ययोजना (2024-2028) जारी की गई।
- **ऐतिहासिक संबंध:** द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जामनगर के महाराजा ने पश्चिमी देशों की ओर जाने का प्रयास कर रही सैकड़ों पोलिश महिलाओं और बच्चों को शरण प्रदान की थी। पोलैंड में उन्हें 'गुड महाराजा' के नाम से जाना जाता है।
- **आर्थिक एवं वाणिज्यिक संबंध:** वर्ष 2013 से 2025 के बीच भारत और पोलैंड के बीच कुल द्विपक्षीय व्यापार में 192% की वृद्धि दर्ज की गई। यह वर्ष 2013 के 1.95 अरब अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2025 में 6.36 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया।
  - ♦ पोलैंड मध्य एवं पूर्वी यूरोप में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक और निवेश साझेदार बना हुआ है।
  - ♦ भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते ने इन अवसरों का अधिक विस्तार किया है। इसके लागू होने पर भारत से पोलैंड को होने वाले निर्यात के लिए नए अवसर खुलेंगे।
- **पर्यटन:** भारत आने वाले पोलिश पर्यटकों की संख्या में विगत दशक के दौरान उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2014 में यह संख्या लगभग 15,000 थी, जो वर्ष 2024 में बढ़कर 43,316 हो गई।

### भारत के लिए पोलैंड का महत्त्व

- **मध्य एवं पूर्वी यूरोप का प्रवेश द्वार:** पोलैंड मध्य एवं पूर्वी यूरोप में भारत का एक महत्वपूर्ण आर्थिक साझेदार है। यह भारतीय व्यवसायों को व्यापक यूरोपीय बाजार तक पहुँचने में सहायता कर सकता है।
- **भारत-EU संबंधों की सुदृढ़ता:** यूरोपीय संघ के एक प्रभावशाली सदस्य के रूप में पोलैंड व्यापार, निवेश, संपर्क और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भारत-EU सहयोग को बेहतर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- **रक्षा प्रौद्योगिकी:** पारस्परिक रूप से सहमत व्यवस्थाओं के अंतर्गत संयुक्त अनुसंधान, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, संयुक्त विकास और संयुक्त उत्पादन की व्यापक संभावनाएँ हैं।
- **साइबर सुरक्षा:** दोनों देश साइबर सुरक्षा, रक्षा नवाचार और अन्य महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में सहयोग को सुदृढ़ कर सकते हैं।
- **संयुक्त राष्ट्र में सुधार:** पोलैंड ने सुधारित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी भूमिका प्राप्त करने की भारत की उम्मीदवारी के प्रति अपना समर्थन दोहराया है।
- **NATO का अग्रिम मोर्चे वाला देश:** यूक्रेन युद्ध के निकट स्थित होने के कारण पोलैंड भारत को यूरोपीय सुरक्षा संबंधी चिंताओं और क्षेत्रीय भू-राजनीतिक परिस्थितियों को समझने का प्रत्यक्ष अवसर प्रदान करता है।

### निष्कर्ष

- पोलैंड यूरोपीय बाजारों तक भारत की पहुँच बढ़ाने, रक्षा एवं प्रौद्योगिकी साझेदारियों में विविधता लाने, भारत-EU संबंधों को सुदृढ़ करने तथा लचीली आपूर्ति शृंखलाओं के निर्माण में एक महत्वपूर्ण साझेदार है।
- भारत-पोलैंड रणनीतिक साझेदारी कार्ययोजना (2024-2028) का प्रभावी कार्यान्वयन इन संभावनाओं को ठोस परिणामों में परिवर्तित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

स्रोत: TH

### भारत-इजराइल द्वारा द्विपक्षीय संबंधों और पश्चिम एशिया की स्थिति पर चर्चा

#### संदर्भ

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने टेलीफोन पर वार्ता के दौरान भारत-इजराइल संबंधों तथा पश्चिम एशिया की स्थिति पर चर्चा की।
- इजराइल के प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारतीय पायलट कैप्टन स्मित मच्छार को इजराइल के स्वतंत्रता दिवस पर संयुक्त रूप से मशाल प्रज्वलित करने के लिए आमंत्रित किया।

### भारत-इजराइल द्विपक्षीय संबंध एवं उभरते आयाम

- **द्विपक्षीय संबंध:** भारत ने वर्ष 1950 में इजराइल को मान्यता देने की घोषणा की। वर्ष 1992 में दोनों देशों के बीच पूर्ण राजनयिक संबंध स्थापित हुए और नियमित रूप से दूतावास खोले गए।
  - वर्ष 2017 में दोनों देशों ने अपने संबंधों को रणनीतिक साझेदारी के स्तर तक उन्नत किया।
  - वर्ष 2022-23 में दोनों देशों ने द्विपक्षीय संबंधों को पूर्ण राजनयिक संबंधों के स्तर तक उन्नत किए जाने के 30 वर्ष पूरे होने का संयुक्त रूप से उत्सव मनाया।
- **रक्षा एवं सुरक्षा:** इजराइल भारत को उन्नत प्रौद्योगिकियों का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता रहा है। इसमें एयरबोर्न वार्निंग एंड कंट्रोल सिस्टम (AWACS) रडार, ड्रोन, मिसाइल प्रणालियाँ और निगरानी प्रणालियाँ शामिल हैं। इसके परिणामस्वरूप इजराइल भारत के सबसे बड़े रक्षा आपूर्तिकर्ताओं में से एक बन गया है।
- **द्विपक्षीय व्यापार:** भारत एशिया में इजराइल का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार तथा विश्व स्तर पर सातवाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।
  - वित्त वर्ष 2023-24 और 2024-25 में रक्षा व्यापार को छोड़कर दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार क्रमशः 6.53 अरब अमेरिकी डॉलर एवं 3.75 अरब अमेरिकी डॉलर रहा।
- **निवेश:** अप्रैल 2000 से मार्च 2024 के दौरान भारत में इजराइल का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) 334.2 मिलियन अमेरिकी डॉलर रहा।
  - भारत में इजराइल के 300 से अधिक निवेश हैं, जो मुख्यतः उच्च प्रौद्योगिकी, कृषि और जल क्षेत्र में केंद्रित हैं।
  - वर्ष 2025 में भारत और इजराइल ने द्विपक्षीय निवेश समझौते (BIA) पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते ने वर्ष 1996 में हस्ताक्षरित पूर्ववर्ती निवेश संधि का स्थान लिया। भारत की ऐसी संधियों से संबंधित नीतिगत समीक्षा के अंतर्गत वर्ष 2017 में पुरानी संधि को समाप्त कर दिया गया था।
- **कृषि एवं जल प्रबंधन:**
  - **1993:** कृषि क्षेत्र में सहयोग के लिए प्रथम समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।
  - **2006:** कृषि क्षेत्र में व्यापक कार्ययोजना प्रारंभ की गई, जिसे तीन वर्षीय चक्रों में लागू किया जाता है। इसका कार्यान्वयन इजराइल की अंतरराष्ट्रीय विकास सहयोग एजेंसी MASHAV के माध्यम से किया जाता है।
  - **2025:** कृषि सहयोग समझौते को संशोधित रूप में हस्ताक्षरित किया गया, जिससे साझेदारी के क्षेत्रों का विस्तार हुआ।
  - भारत-इजराइल उत्कृष्टता केंद्र (CoE) बागवानी के क्षेत्र में इजराइल की विशेषज्ञता, प्रौद्योगिकियों और नवाचारों को प्रदर्शित करते हैं।

- **विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, आतंकवाद-रोधी सहयोग और नवाचार:** विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (S&T) के क्षेत्र में भारत-इजराइल सहयोग की निगरानी संयुक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी समिति करती है। इसकी स्थापना वर्ष 1993 में हस्ताक्षरित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहयोग समझौते के अंतर्गत की गई थी।
  - संयुक्त परियोजनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए 40 मिलियन अमेरिकी डॉलर का भारत-इजराइल औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास तथा तकनीकी नवाचार कोष (I4F) भी स्थापित किया गया।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** दोनों देश I2U2 समूह (भारत, इजराइल, अमेरिका और संयुक्त अरब अमीरात) के सक्रिय सदस्य हैं। यह समूह आर्थिक एवं अंतरिक्ष सहयोग पर केंद्रित है। इसके अंतर्गत खाद्य पार्कों और अंतरिक्ष-आधारित पर्यावरणीय उपकरणों जैसी परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जाता है।

### भारत के लिए महत्व

- **रक्षा एवं सुरक्षा:** इजराइल भारत के लिए महत्वपूर्ण रक्षा प्रौद्योगिकियों का एक विश्वसनीय साझेदार है। यह भारत की आत्मनिर्भरता तथा 'मेक इन इंडिया' पहल को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
- **कृषि एवं जल प्रबंधन:** इजराइल नवाचार, जल संरक्षण और उच्च उत्पादकता वाली कृषि पद्धतियों के लिए जाना जाता है। भारत द्विपक्षीय सहयोग के माध्यम से इन प्रौद्योगिकियों को अपनाकर कृषि उत्पादकता बढ़ा सकता है तथा जल संसाधनों का अधिक कुशल उपयोग कर सकता है।
- **भू-राजनीति:** पश्चिम एशिया में इजराइल भारत का एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार है। यह भारत की 'एकट वेस्ट' नीति को पूरक सहयोग प्रदान करता है।

### पश्चिम एशिया

- पश्चिम एशिया एशिया का सबसे पश्चिमी उपक्षेत्र है। इसमें व्यापक रूप से निम्नलिखित देश शामिल हैं:
  - **अरब प्रायद्वीप:** सऊदी अरब, यमन, ओमान, संयुक्त अरब अमीरात (UAE), कतर, बहरीन और कुवैत।
  - **लेवेंट क्षेत्र:** जॉर्डन, लेबनान, सीरिया, इजराइल और फिलिस्तीन।
  - **अन्य प्रमुख देश:** इराक, ईरान और तुर्किये।
  - **व्यापक भौगोलिक परिभाषा में शामिल अन्य क्षेत्र:** भौगोलिक वर्गीकरण के आधार पर साइप्रस तथा दक्षिण काकेशस के कुछ हिस्सों को भी इसमें शामिल किया जाता है।

- 'पश्चिम एशिया' और 'मध्य पूर्व' शब्दों का प्रायः एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है, हालाँकि इनकी सटीक भौगोलिक सीमाओं में अंतर हो सकता है।
- यह क्षेत्र रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके पश्चिम में अफ्रीका और उत्तर में यूरोप स्थित हैं। इसके आसपास भूमध्य सागर, फारस की खाड़ी और कैस्पियन सागर जैसे महत्वपूर्ण जल निकाय स्थित हैं।



### पश्चिम एशिया में संकट का भारत पर प्रभाव

- **भारत की ऊर्जा सुरक्षा:** पश्चिम एशिया में संघर्ष भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए प्रत्यक्ष खतरा उत्पन्न करता है, क्योंकि भारत के कच्चे तेल के आयात का एक बड़ा हिस्सा खाड़ी क्षेत्र से आता है।
  - वैश्विक तेल कीमतों में वृद्धि से भारत का आयात बिल बढ़ता है, चालू खाता घाटा (CAD) बढ़ सकता है तथा घरेलू अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति का दबाव उत्पन्न हो सकता है।
- **भारतीय प्रवासी समुदाय:** खाड़ी देशों में लाखों भारतीय कामगार रहते हैं। इसलिए क्षेत्रीय संघर्ष के दौरान उनकी सुरक्षा भारत के लिए एक प्रमुख चिंता का विषय बन जाती है।
- **प्रेषण:** भारत के लगभग एक करोड़ प्रवासी विदेशों में रहते हैं। वे प्रेषण, रियल एस्टेट, शेयर बाजार और अन्य माध्यमों से भारतीय अर्थव्यवस्था में अरबों डॉलर का योगदान करते हैं। युद्ध इन आर्थिक प्रवाहों और निवेश गतिविधियों को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है।

- **निवेश:** संयुक्त अरब अमीरात का गोल्डन वीजा कार्यक्रम भारत के नए दौर के प्रौद्योगिकी उद्यमियों, स्टार्टअप संस्थापकों तथा करोड़पतियों और अरबपतियों को आकर्षित करने में सफल रहा है। इनमें से अनेक लोग दुबई में रहते हैं तथा भारत में अपने व्यवसाय संचालित करते हैं।
  - पश्चिम एशिया में युद्ध इन निवेशों और व्यावसायिक गतिविधियों को प्रभावित कर सकता है। इससे बड़े ब्रांडों के बाजार मूल्य तथा व्यापक निवेश गतिविधियों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका है।

### आगे की राह

- भारत-इजराइल संबंध रक्षा, कृषि, जल प्रबंधन, नवाचार और व्यापार सहित अनेक क्षेत्रों में विस्तृत एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदारी हैं।
- रक्षा और कृषि इस साझेदारी के सबसे सुदृढ़ स्तंभ बने हुए हैं, जबकि खाद्य सुरक्षा, स्टार्टअप और I2U2 के माध्यम से बहुपक्षीय सहयोग जैसे नए क्षेत्रों में भी साझेदारी का विस्तार हो रहा है।

स्रोत: TH

### चीनी आयात में वृद्धि के बीच भारत के वस्त्र उद्योग का सुदृढ़ीकरण

#### संदर्भ

- क्लॉथ मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (CMAI) के सर्वेक्षण में वस्त्र उद्योग में 52% की वृद्धि की संभावना व्यक्त की गई है। साथ ही, चीन से होने वाले आयात को लेकर चिंताएँ भी व्यक्त की गई हैं।

### भारत का वस्त्र क्षेत्र

- **घरेलू व्यापार में योगदान:** भारत का घरेलू परिधान एवं वस्त्र उद्योग देश के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 2.3%, औद्योगिक उत्पादन में 13% तथा निर्यात में 12% का योगदान देता है।
  - वर्ष 2025-26 तक इसका आकार बढ़कर लगभग 190 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया है।
- **वैश्विक व्यापार में हिस्सेदारी:** वैश्विक वस्त्र एवं परिधान व्यापार में भारत की हिस्सेदारी लगभग 4% है।
- **निर्यात:** भारत विश्व में वस्त्र एवं परिधान का छठा सबसे बड़ा निर्यातक है।
  - वर्ष 2023-24 में हस्तशिल्प सहित वस्त्र एवं परिधान (T&A) का भारत के कुल निर्यात में 8.21% का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

- **कच्चे माल का उत्पादन:** भारत विश्व में कपास और जूट के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है।
  - भारत विश्व में रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक भी है। विश्व के लगभग 95% हस्तनिर्मित वस्त्रों का उत्पादन भारत में होता है।
- **रोजगार सृजन:** वस्त्र उद्योग भारत में रोजगार प्रदान करने वाला दूसरा सबसे बड़ा क्षेत्र है। यह लगभग 4.5 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष तथा संबद्ध क्षेत्रों में लगभग 10 करोड़ लोगों को रोजगार प्रदान करता है।
- **प्रमुख क्षेत्र एवं राज्य:** आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, हरियाणा, झारखंड और गुजरात भारत के प्रमुख वस्त्र एवं परिधान विनिर्माण राज्य हैं।

### भारत के वस्त्र क्षेत्र की चुनौतियाँ

- **विखंडित औद्योगिक संरचना:** यह क्षेत्र अत्यधिक विखंडित है तथा इसमें छोटे और अनौपचारिक उद्यमों की प्रधानता है। इन उद्यमों को उत्पादन क्षमता बढ़ाने, प्रौद्योगिकी अपनाने और औपचारिक वित्त तक पहुँच प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
- **कम श्रम उत्पादकता एवं कौशल का अभाव:** पुरानी उत्पादन पद्धतियों, औपचारिक प्रशिक्षण की सीमित उपलब्धता तथा उद्योग और शैक्षणिक संस्थानों के बीच अपर्याप्त समन्वय के कारण श्रम उत्पादकता कम बनी हुई है।
- **उच्च लॉजिस्टिक्स लागत:** भारत में परिवहन एवं लॉजिस्टिक्स की लागत अधिक है। सीमा शुल्क निकासी में होने वाली देरी भी निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को कम करती है।
- **किफायती ऋण तक सीमित पहुँच:** सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSMEs) तथा हथकरघा इकाइयों के लिए किफायती ऋण की उपलब्धता एक प्रमुख चुनौती है।

### चीन का वस्त्र विनिर्माण मॉडल सफल क्यों है?

- **एकीकृत आपूर्ति शृंखलाएँ:** चीन के वस्त्र औद्योगिक क्लस्टर कताई, बुनाई, रंगाई, परिधान निर्माण और सहायक सामग्री के उत्पादन को एक ही औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र में समाहित करते हैं।
  - उदाहरण के लिए, झेजियांग प्रांत का शाओक्सिंग वस्त्र एवं कपड़ा व्यापार का एक प्रमुख केंद्र है।
- **प्रौद्योगिकी-आधारित विनिर्माण:** चीन की वस्त्र मिलें उत्पादकता और गुणवत्ता में एकरूपता बढ़ाने के लिए स्वचालित कताई, डिजिटल गुणवत्ता निरीक्षण तथा स्मार्ट विनिर्माण प्रणालियों का तेजी से उपयोग कर रही हैं।
- **सुदृढ़ अवसंरचना एवं लॉजिस्टिक्स:** औद्योगिक क्लस्टरों को बंदरगाहों, राजमार्गों, भंडारण सुविधाओं और निर्यात नेटवर्क का समर्थन प्राप्त है।

- निगबो-झौशान बंदरगाह वस्त्र उत्पादों तथा अन्य विनिर्मित वस्तुओं को अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **पैमाने की अर्थव्यवस्थाएँ:** बड़े पैमाने पर उत्पादन की क्षमता से कंपनियाँ प्रति इकाई लागत कम कर सकती हैं और थोक ऑर्डर समय पर पूरा कर सकती हैं।
- उदाहरण के लिए, ग्वांगझोउ तथा इसके आसपास का पर्ल रिवर डेल्टा विनिर्माण क्षेत्र परिधान निर्माण और व्यापार के व्यापक नेटवर्क के लिए जाना जाता है, जो घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

### वस्त्र क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए पहलें

- **प्रधानमंत्री मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल रीजन एंड अपैरल (PM MITRA) पार्क योजना:** इसका उद्देश्य भारत में सात मेगा एकीकृत वस्त्र पार्क विकसित करना है। ये तमिलनाडु, तेलंगाना, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश में स्थापित किए जाने हैं।
  - इस योजना का लक्ष्य आधुनिक, एकीकृत और विश्वस्तरीय 'प्लग-एंड-प्ले' वस्त्र अवसंरचना विकसित करना है, जिससे उद्यमों को तैयार औद्योगिक सुविधाएँ उपलब्ध हो सकें।
- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI):** जापानी निवेश भारत की 'मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड' तथा 'चाइना-प्लस-वन' विनिर्माण रणनीतियों के उद्देश्यों के अनुरूप है।
- **उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना:** वस्त्र क्षेत्र के लिए इस योजना को मानव-निर्मित रेशा (MMF) आधारित परिधान, MMF कपड़ों तथा तकनीकी वस्त्रों के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से स्वीकृति दी गई। इसका लक्ष्य वस्त्र क्षेत्र में उत्पादन क्षमता एवं औद्योगिक पैमाने का विस्तार करना और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना है।
- **निर्यात संवर्धन परिषदें (EPCs):** भारत में 11 निर्यात संवर्धन परिषदें कार्यरत हैं। ये रेशे से लेकर तैयार उत्पादों तक वस्त्र एवं परिधान मूल्य शृंखला के विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनमें हथकरघा, हस्तशिल्प और कालीन जैसे पारंपरिक क्षेत्र भी शामिल हैं।
- **राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन (NTTM):** वर्ष 2020 में शुरू किए गए इस मिशन का उद्देश्य भारत में तकनीकी वस्त्रों के उत्पादन, नवाचार और निर्यात को बढ़ावा देना है।
- **राष्ट्रीय रेशा मिशन:** इसका उद्देश्य प्राकृतिक और मानव-निर्मित रेशों की उत्पादकता, गुणवत्ता तथा सततता में सुधार करना है।
- **हथकरघा एवं हस्तशिल्प क्षेत्र:** राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम के अंतर्गत लगभग ₹2,000 करोड़ का निवेश किया गया है।
- सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM), इंडिया हैंडमेड पोर्टल, भौगोलिक संकेतक (GI) टैगिंग, मेगा हथकरघा क्लस्टर और बुनकर मुद्रा योजना जैसी पहलों ने बाजार के अवसरों का विस्तार किया है तथा कारीगरों की आय को सुदृढ़ करने में योगदान दिया है।

### आगे की राह

- **प्रौद्योगिकी उन्नयन के लिए सहायता:** स्वचालित कर्घे और ऊर्जा-कुशल मशीनें खरीदने वाले MSMEs को समयबद्ध ब्याज सब्सिडी अथवा ऋण गारंटी प्रदान की जानी चाहिए, ताकि वे आधुनिक तकनीक अपना सकें।
- **मानव-निर्मित रेशों तक बेहतर पहुँच:** जहाँ प्रतिलोम शुल्क संरचना विद्यमान है, वहाँ उसे तर्कसंगत बनाया जाना चाहिए। साथ ही, प्रतिस्पर्धी कीमतों पर पॉलिएस्टर और विस्कोस जैसे कच्चे माल की घरेलू उपलब्धता बढ़ाई जानी चाहिए, जिससे भारतीय कंपनियाँ वैश्विक सिंथेटिक परिधान बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा सकें।
- **वस्त्र आपूर्तिकर्ता नेटवर्क का विकास:** ऐसे डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित किए जाने चाहिए, जो परिधान निर्यातकों को घरेलू धागा, कपड़ा, रंगाई, सहायक सामग्री और पैकेजिंग आपूर्तिकर्ताओं से जोड़ें। इससे कच्चे माल की खरीद में होने वाली देरी कम होगी तथा आपूर्ति शृंखला अधिक कुशल बनेगी।
- **श्रमिक उत्पादकता में सुधार:** उन्नत मशीनों के संचालन, परिधान गुणवत्ता नियंत्रण तथा डिजिटल विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में उद्योग से संबद्ध प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विस्तार किया जाना चाहिए।

### निष्कर्ष

- चीन का अनुभव दर्शाता है कि वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए एकीकृत विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र, तकनीकी उन्नति और कुशल आपूर्ति शृंखलाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
- भारत के लिए 'चाइना-प्लस-वन' रणनीति घरेलू विनिर्माण क्षमताओं को सुदृढ़ करने तथा वैश्विक निवेश आकर्षित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करती है।
- उत्पादकता, नवाचार और सतत विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करके भारत वैश्विक वस्त्र मूल्य शृंखला में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर सकता है। इसके लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाना, कौशल विकास को बढ़ावा देना, लॉजिस्टिक्स लागत कम करना और घरेलू आपूर्ति शृंखलाओं को एकीकृत करना आवश्यक होगा।

स्रोत: TH

## उत्सर्जन अंतराल रिपोर्ट, 2026

### संदर्भ

- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) ने उत्सर्जन अंतराल रिपोर्ट, 2026 जारी की है।

### परिचय

- यह UNEP द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले वार्षिक जलवायु वार्ताओं से पहले जारी की जाने वाली रिपोर्ट है।
- यह रिपोर्ट वर्तमान में देशों द्वारा की गई प्रतिबद्धताओं के आधार पर वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की संभावित दिशा और वैश्विक तापवृद्धि को 1.5°C तक सीमित रखने के लिए आवश्यक उत्सर्जन स्तर के बीच के अंतर का आकलन करती है।
- रिपोर्ट का प्रत्येक संस्करण उत्सर्जन अंतराल को कम करने के उपायों का विश्लेषण करता है।
- इस रिपोर्ट में देशों के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) का आकलन किया गया है। देशों को इन योगदानों को प्रत्येक पाँच वर्ष में अद्यतन करना आवश्यक है। इसका उद्देश्य यह अनुमान लगाना है कि यदि इन योजनाओं को पूरी तरह लागू किया जाए, तो वैश्विक तापमान में कितनी वृद्धि हो सकती है।

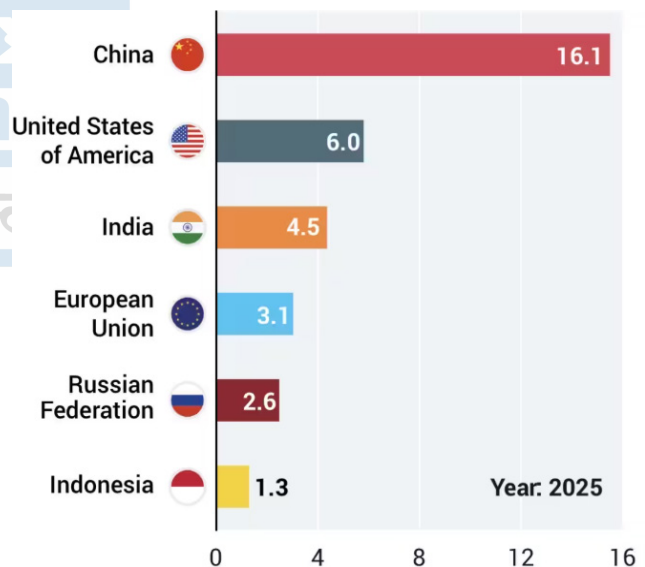
### संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) के बारे में

- स्थापना:** वर्ष 1972 में।
- परिचय:** यह संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के अंतर्गत पर्यावरण संबंधी मामलों का प्रमुख प्राधिकरण है।
- नीति-निर्माण निकाय:** संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा UNEP का नीति-निर्माण निकाय है।
- मुख्यालय:** नैरोबी, केन्या।
- प्रमुख रिपोर्टें:** ग्लोबल एनवायरनमेंट आउटलुक, द राइज़ ऑफ़ एनवायरनमेंटल क्राइम रिपोर्ट, एक्शनस ऑन एयर क्वालिटी, फ्रंटियर्स रिपोर्ट तथा अडैप्टेशन गैप रिपोर्ट।

### रिपोर्ट के प्रमुख निष्कर्ष

- वैश्विक उत्सर्जन:** वर्ष 2025 में वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन वर्ष 2024 के लगभग समान स्तर पर रहा। यह लगभग 58.4 अरब टन कार्बन डाइऑक्साइड समतुल्य (CO<sub>2</sub>e) था।
- उत्सर्जन के प्रमुख स्रोत:** कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का दो-तिहाई से अधिक हिस्सा जीवाश्म ईंधनों से संबंधित स्रोतों से आता है। शेष उत्सर्जन में भूमि उपयोग, भूमि-उपयोग परिवर्तन एवं वानिकी (LULUCF) से संबंधित CO<sub>2</sub> उत्सर्जन, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड तथा फ्लोरीनयुक्त गैसों (F-gases) का योगदान शामिल है।

- उत्सर्जन की प्रवृत्तियाँ:** वर्ष 2025 में तेल, कोयले और गैस के दहन से होने वाला CO<sub>2</sub> उत्सर्जन तथा नाइट्रस ऑक्साइड और फ्लोरीनयुक्त गैसों का उत्सर्जन बढ़ता रहा। वहीं, मीथेन उत्सर्जन वर्ष 2024 के लगभग समान स्तर पर रहा।
- प्रमुख योगदानकर्ता:** अफ्रीकी संघ को छोड़कर, G20 के सदस्य देश सामूहिक रूप से वैश्विक उत्सर्जन के लगभग 76% के लिए जिम्मेदार हैं।
- 1.5°C का लक्ष्य:** रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक तापवृद्धि को 1.5°C तक सीमित रखने का लक्ष्य अब अत्यंत कठिन हो गया है। वर्तमान परिस्थितियों में विश्व के लिए वैश्विक तापमान वृद्धि को लगभग 1.8°C तक सीमित रखना सर्वोत्तम संभावित परिणाम हो सकता है।
  - 1.5°C का लक्ष्य वर्ष 2015 के पेरिस जलवायु समझौते का प्रमुख जलवायु उद्देश्य है। इसके अंतर्गत दीर्घकालिक वैश्विक तापवृद्धि को औद्योगिक-पूर्व स्तर (1850–1900) की तुलना में 1.5°C तक सीमित रखने का प्रयास किया जाता है।
- भारत-विशिष्ट तथ्य:** भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जक है, लेकिन इसका प्रति व्यक्ति उत्सर्जन शीर्ष दो उत्सर्जक देशों की तुलना में काफी कम है।



- प्रमुख चिंताएँ:** जलवायु प्रभावों में वृद्धि: 1.5°C से अधिक तापवृद्धि का प्रत्येक अतिरिक्त अंश तथा तापवृद्धि की प्रत्येक अतिरिक्त अवधि जलवायु संबंधी प्रभावों और जोखिमों को बढ़ाती है।
  - इसके परिणामस्वरूप विनाशकारी बाढ़, भीषण लू और जंगलों में अग्नि जैसी घटनाओं की तीव्रता तथा आवृत्ति बढ़ सकती है।
- प्रमुख सिफारिशें:** 1.5°C के लक्ष्य की ओर वापसी: इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में पुनः आगे बढ़ने के लिए वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में वर्ष 2025 के स्तर की तुलना में पर्याप्त कमी करना आवश्यक है।

- रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 के स्तर की तुलना में वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में निम्नलिखित कटौती आवश्यक होगी:
  - वर्ष 2030 तक: 18% की कमी।
  - वर्ष 2035 तक: 45% की कमी।
  - वर्ष 2040 तक: 69% की कमी।
- ये कटौती के लक्ष्य वर्ष 2025 के उत्सर्जन स्तर को आधार मानकर निर्धारित किए गए हैं।

स्रोत: DTE

## संक्षिप्त समाचार

### केरल के यहूदी समुदाय

#### संदर्भ

- एर्नाकुलम स्थित कडवुमभागम सिनेगॉग (यहूदी उपासना स्थल) और फोर्ट कोच्चि स्थित विरासत भवन कोडर हाउस से संबंधित हालिया घटनाओं ने केरल के घटती जनसंख्या वाले यहूदी समुदाय की ओर पुनः ध्यान आकर्षित किया है।

#### परिचय

- केरल में यहूदियों का प्रवास इस क्षेत्र के प्राचीन एवं समृद्ध मसाला व्यापार से जुड़ा हुआ है। राज्य के यहूदी मुख्यतः दो विशिष्ट समुदायों में विभाजित हैं—मलाबारी अथवा 'काले यहूदी' और परदेसी अथवा 'श्वेत यहूदी'।
- कोच्चि में दो अन्य छोटे यहूदी समुदाय भी थे।
  - **बगदादी यहूदी:** अरबी भाषा बोलने वाले ये यहूदी 18वीं और 19वीं शताब्दी में वर्तमान ईरान, इराक और अफगानिस्तान के क्षेत्रों से आए थे। समय के साथ इन्हें भी 'श्वेत यहूदियों' के रूप में वर्गीकृत किया जाने लगा।
  - **मेशुहरारिम:** यह शब्द परदेसी यहूदी समुदाय के एक ऐसे समूह के लिए प्रयुक्त होता था, जिसमें यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों से लाए गए मुक्त दास, धर्मांतरित व्यक्ति तथा उनके वंशज शामिल थे।

#### मलाबारी यहूदी

- मलाबारी यहूदियों को कोचीन यहूदी भी कहा जाता है। वे अपने इतिहास को राजा सोलोमन के काल (10वीं शताब्दी ईसा पूर्व, लगभग 3,000 वर्ष पूर्व) से जोड़ते हैं।
- प्रारंभ में वे क्रेगनोर (वर्तमान में त्रिशूर जिले का कोडुंगलूर) में बसे थे। इस समुदाय द्वारा इस स्थान को शिंगली कहा जाता था।
- 16वीं शताब्दी में पुर्तगालियों के आगमन के पश्चात मलाबारी यहूदी क्रेगनोर से दक्षिण की ओर कोच्चि चले गए।

- **कडवुमभागम सिनेगॉग:** यह एर्नाकुलम स्थित एक ऐतिहासिक यहूदी उपासना स्थल है, जो परंपरागत रूप से केरल के मलाबारी यहूदियों से संबंधित है।

#### परदेसी यहूदी

- परदेसी यहूदियों को 'विदेशी यहूदी' भी कहा जाता है। वे 15वीं और 16वीं शताब्दी में इबेरियाई प्रायद्वीप से भारतीय उपमहाद्वीप में आए थे।
- स्पेन और पुर्तगाल के कैथोलिक शासकों द्वारा उत्पीड़न के कारण उन्होंने भारत में शरण ली। वे मालाबार तट पर पहले से बसे यहूदी समुदायों के साथ रहने लगे। इसके अतिरिक्त, वे मद्रास (वर्तमान चेन्नई) में भी बसे।
- कोच्चि के परदेसी यहूदी केरल के मसाला व्यापार में सक्रिय थे, जबकि मद्रास में बसे यहूदी गोलकुंडा के हीरों और अन्य बहुमूल्य रत्नों के व्यापार में संलग्न थे।

#### भारत में यहूदी जनसंख्या में गिरावट

- 1950 के दशक से केरल के यहूदियों का इजराइल की ओर निरंतर प्रवास होता रहा है।
- **अलियाह:** वर्ष 1948 में इजराइल की स्थापना के बाद केरल से इजराइल की ओर बड़े पैमाने पर यहूदी प्रवास हुआ।
  - यहूदी समुदाय के लोगों के इजराइल में आप्रवासन को 'अलियाह' कहा जाता है।
  - केरल के परदेसी यहूदी समुदाय की अंतिम महिला सदस्य क्वीनि हालेगुआ का वर्ष 2024 में कोच्चि में निधन हो गया।

स्रोत: IE

#### काशी तमिल संगमम् (KTS 5.0)

#### संदर्भ

- शिक्षा मंत्री ने काशी तमिल संगमम् (KTS 5.0) के पाँचवें संस्करण के लिए पंजीकरण पोर्टल का शुभारंभ किया।
  - इस संस्करण की विषयवस्तु 'तिरुक्कुरल पयिल्वोम्' — आइए, तिरुक्कुरल सीखें है।

#### काशी तमिल संगमम् के बारे में

- यह कार्यक्रम तमिलनाडु और काशी के बीच सदियों पुराने सभ्यतागत संबंधों का उत्सव मनाता है, उन्हें पुनः पुष्ट करता है और सुदृढ़ बनाता है। ये दोनों प्राचीन ज्ञान एवं शिक्षा के प्रमुख केंद्र रहे हैं।
- यह आयोजन 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को भी सुदृढ़ करता है।

- काशी तमिल संगमम् का प्रथम संस्करण वर्ष 2022 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से आयोजित किया गया था।

### तिरुक्कुरल के बारे में

- तिरुक्कुरल तमिल साहित्य की एक शास्त्रीय कृति है, जिसमें व्यक्तिगत आचरण, सामाजिक जीवन और शासन के संबंध में नैतिक, दार्शनिक तथा व्यावहारिक मार्गदर्शन दिया गया है।
- रचयिता: तिरुवल्लुवर, एक प्रतिष्ठित तमिल कवि एवं दार्शनिक।
- संरचना:** इसमें 1,330 द्विपदियाँ (कुरल) हैं, जिन्हें 133 अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक अध्याय में 10 द्विपदियाँ हैं।
- तीन प्रमुख भाग:**
  - अरम :** सदाचार एवं नैतिकता।
  - पोरुल :** धन, संसाधन एवं सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था।
  - इन्बम :** प्रेम एवं आनंद।
- ये तीनों भाग अंततः वीडु अर्थात् मुक्ति अथवा मोक्ष की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं।

स्रोत: PIB

## प्रधानमंत्री सामाजिक सहायता योजना

### चर्चा में क्यों?

- राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP) का नाम बदलकर प्रधानमंत्री सामाजिक सहायता योजना कर दिया गया है।

### राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP) की पृष्ठभूमि

- इसे वर्ष 1995 में शुरू किया गया था। यह संविधान के अनुच्छेद 41 को प्रभावी बनाने का एक माध्यम है, जिसके अंतर्गत राज्य को बेरोजगारी, वृद्धावस्था, बीमारी और दिव्यांगता की स्थिति में सार्वजनिक सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया गया है।
- यह पूर्णतः केंद्र द्वारा वित्तपोषित केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसके अंतर्गत 100% केंद्रीय सहायता प्रदान की जाती है।
- इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले व्यक्ति को देश में कहीं भी न्यूनतम सामाजिक सहायता प्राप्त हो सके।
- यह योजना ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों को कवर करती है। इसके विभिन्न घटकों के अंतर्गत सामान्यतः लाभार्थी परिवार का गरीबी रेखा से नीचे होना आवश्यक है।

### प्रमुख घटक:

- वृद्धावस्था पेंशन।
- विधवा पेंशन।
- दिव्यांग व्यक्तियों के लिए पेंशन।
- परिवार के मुख्य कमाऊ सदस्य की मृत्यु होने पर एकमुश्त पारिवारिक सहायता।



### नवीनतम घटनाक्रम

- योजना का विस्तार:** केंद्रीय मंत्रिमंडल ने राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP) को वर्ष 2026-27 से 2030-31 तक पाँच वर्षों के लिए जारी रखने की स्वीकृति दी है। इसके लिए कुल ₹53,428 करोड़ का परिव्यय निर्धारित किया गया है।
- संशोधित नामकरण:** संशोधित नामकरण के अंतर्गत इसके चार घटकों के नाम निम्नानुसार रखे गए हैं:
  - प्रधानमंत्री वृद्धावस्था पेंशन योजना:** वृद्धावस्था पेंशन के लिए।
  - प्रधानमंत्री विधवा पेंशन योजना:** विधवा पेंशन के लिए।
  - प्रधानमंत्री दिव्यांगजन पेंशन योजना:** दिव्यांगता पेंशन के लिए।
  - प्रधानमंत्री परिवार लाभ योजना:** परिवार को एकमुश्त सहायता प्रदान करने के लिए।
- दिव्यांगता पेंशन की पात्रता में परिवर्तन:** संशोधित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय दिव्यांगता पेंशन योजना के अंतर्गत पात्रता का दायरा बढ़ाया गया है।
- दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के अंतर्गत दिव्यांगता की निर्धारित सीमा को 80% से घटाकर कम-से-कम 40% कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त, न्यूनतम आयु सीमा भी हटा दी गई है, जिससे पात्र लाभार्थियों को जन्म से ही लाभ प्राप्त करने की अनुमति मिल सकेगी।

स्रोत: PIB

## शामोडा वायरस

### चर्चा में क्यों?

- फ्रांस के स्वास्थ्य अधिकारियों ने शामोडा वायरस के संक्रमण का मनुष्यों में प्रथम ज्ञात मामला दर्ज किया है।

### परिचय

- शामोडा एक पशु वायरस है, जो मिज नामक छोटे रक्तचूषक कीट के माध्यम से फैलता है। यह ऑर्थोबुनियावायरस समूह के सिम्बू सीरोग्रुप से संबंधित है।
- इसी समूह में श्मालेनबर्ग वायरस और अकाबाने वायरस भी शामिल हैं।
- **प्रमुख विशेषताएँ:**
  - **प्रमुख प्रभावित पशु:** यह मुख्यतः मवेशियों को संक्रमित करता है।
  - **लक्षण:** सामान्य लक्षणों में बुखार, दस्त और दूध उत्पादन में कमी शामिल हैं।
  - **पहचान:** इस वायरस का प्रथम बार पता 1960 के दशक के मध्य में नाइजीरिया में चला था।
  - **भौगोलिक प्रसार:** वर्ष 2026 तक इसके मामले पश्चिमी, पूर्वी और दक्षिणी अफ्रीका तथा जापान में छिटपुट रूप से दर्ज किए गए थे।
  - **संचरण का माध्यम:** यह क्यूलिकोइड्स नामक छोटे रक्तचूषक कीटों के काटने से फैलता है।
- ये वही कीट हैं जो ब्लूटंग रोग और एपिज़ूटिक हैमरेजिक डिजीज़ जैसे पशु रोगों के प्रसार में भी भूमिका निभाते हैं।

स्रोत: TH

## eMudhra द्वारा डिजिटल प्रमाणपत्र व्यवसाय से बाहर निकलने का निर्णय

### चर्चा में क्यों?

- डिजिटल सुरक्षा कंपनी eMudhra ने वेबसाइटों के लिए सुरक्षा प्रमाणपत्र जारी करने के अपने वैश्विक व्यवसाय से बाहर निकलने का निर्णय लिया है। इसमें भारत का कर पोर्टल भी शामिल है।
- प्रमुख ब्राउज़र निर्माताओं ने सुरक्षा संबंधी कमजोरियों के कारण इन प्रमाणपत्रों को अवरुद्ध कर दिया था। इससे वैश्विक स्तर पर साइबर सुरक्षा संबंधी चिंताएँ उत्पन्न हुईं।

### eMudhra के डिजिटल प्रमाणपत्र

- eMudhra बेंगलुरु स्थित एक प्रमाणन प्राधिकरण (CA) है। यह ऐसे डिजिटल प्रमाणपत्र जारी करता है, जो किसी वेबसाइट या सॉफ्टवेयर प्रकाशक की प्रामाणिकता प्रमाणित करते हैं।

- ब्राउज़र इन प्रमाणपत्रों का उपयोग वेबसाइट की पहचान सत्यापित करने तथा एन्क्रिप्टेड (HTTPS/TLS) कनेक्शन स्थापित करने के लिए करते हैं।
- कोड-साइनिंग प्रमाणपत्र भी इसी प्रकार सॉफ्टवेयर की प्रामाणिकता प्रमाणित करते हैं तथा यह सुनिश्चित करने में सहायता करते हैं कि सॉफ्टवेयर वास्तविक प्रकाशक द्वारा जारी किया गया है और उसके साथ छेड़छाड़ नहीं की गई है।
- eMudhra की स्थापना वर्ष 2008 में हुई थी। इसे सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 के अंतर्गत भारतीय नियंत्रक प्रमाणन प्राधिकरण (CCA) से लाइसेंस प्राप्त है।
- कंपनी की वेबसाइट के अनुसार, वर्ष 2015 में यह भारत की प्रथम ई-साइन सेवा प्रदाता बनी। कंपनी ने यह भी बताया था कि वित्त वर्ष 2022-23 तक उसने 6 करोड़ से अधिक डिजिटल प्रमाणपत्र जारी किए थे।
- कंपनी भारत में डिजिटल दस्तावेज हस्ताक्षर सेवाएँ, उद्यमों के लिए सार्वजनिक कुंजी अवसंरचना (PKI) समाधान तथा अन्य पहचान एवं प्रमाणीकरण सेवाएँ भी प्रदान करती है।

### प्रमाणपत्रों को अवरुद्ध करने का कारण

- आठ मध्यवर्ती प्रमाणपत्र 30 अप्रैल, 2025 को आयोजित एक कुंजी-निर्माण प्रक्रिया के दौरान बनाए गए थे।
- कुंजी को सुरक्षित रूप से लपेटने और खोलने की प्रक्रिया में एक त्रुटि के कारण सुदृढ़ कुंजियों के साथ कमजोर कुंजियों का एक अतिरिक्त समूह भी उत्पन्न हो गया। ये कमजोर कुंजियाँ ब्राउज़र के रूट स्टोर में प्रकाशित हो गईं।
- सभी आठ प्रमाणपत्रों में P-384 निजी कुंजियों के मान 256 से छोटे थे। इस कारण केवल 256 संभावित संख्याओं का परीक्षण करके इन कुंजियों को पुनः प्राप्त किया जा सकता था।
- किसी मध्यवर्ती प्रमाणपत्र की निजी कुंजी का उपयोग किसी भी वेबसाइट के लिए वैध दिखने वाला प्रमाणपत्र जारी करने हेतु किया जा सकता है। इससे निम्नलिखित खतरे उत्पन्न हो सकते हैं:
  - **फर्जी वेबसाइटें:** उपयोगकर्ताओं को धोखाधड़ी वाली वेबसाइटों पर भेजना।
  - **मैन-इन-द-मिडिल (MITM) हमले:** उपयोगकर्ता और वेबसाइट के बीच संचार को अवरोधित करना।
  - **दुर्भावनापूर्ण सॉफ्टवेयर:** हानिकारक सॉफ्टवेयर को प्रामाणिक दिखाने के लिए उस पर डिजिटल हस्ताक्षर करना।

स्रोत: IE

## PHP2Shell

### संदर्भ

- वेबसाइटों में उपयोग की जाने वाली प्रोग्रामिंग भाषा PHP में दो गंभीर सुरक्षा कमजोरियाँ सामने आईं
- इनके कारण दुनिया भर में आपातकालीन सुरक्षा अपडेट जारी किए गए और एहतियातन कुछ सेवाओं को बंद करना पड़ा।

### PHP के बारे में

- PHP का पूर्ण रूप हाइपरटेक्स्ट प्रीप्रोसेसर है। यह एक मुक्त स्रोत प्रोग्रामिंग भाषा है, जिसका उपयोग गतिशील वेबसाइटों और वेब एप्लिकेशन के विकास में किया जाता है।
- यह वेबसाइटों को विभिन्न प्रकार की सूचनाओं का प्रसंस्करण करने में सहायता करती है। उदाहरण के लिए, किसी खाते में लॉगिन करना, आवेदन जमा करना या ऑनलाइन खरीदारी करना।
- PHP का उपयोग निःशुल्क है और इसका रखरखाव स्वयंसेवकों के योगदान से किया जाता है।
  - वर्डप्रेस, जो विश्व भर की 40% से अधिक वेबसाइटों को संचालित करने में उपयोग किया जाता है, PHP पर आधारित है। इन वेबसाइटों में ब्लॉग, सरकारी पोर्टल, समाचार वेबसाइटें और ऑनलाइन स्टोर शामिल हैं।

### PHP2Shell क्या है?

- PHP2Shell, PHP में पाई गई दो गंभीर सुरक्षा कमजोरियों को दिया गया नाम है। इनके माध्यम से हमलावर प्रभावित वेब सर्वरों पर दूरस्थ रूप से दुर्भावनापूर्ण कोड निष्पादित कर सकते हैं।
- इन कमजोरियों के कारण कुछ परिस्थितियों में हमलावरों को लॉगिन किए बिना या सर्वर की मेमोरी में संग्रहीत संवेदनशील जानकारी तक पहुँच प्राप्त किए बिना भी हमला करने का अवसर मिल सकता है।
- ये कमजोरियाँ स्वयं PHP भाषा में उपस्थित हैं। प्रभावित कॉन्फिगरेशन और हमले की परिस्थितियों के आधार पर, वेबसाइट की अपनी प्रमाणीकरण जाँच पूरी होने से पहले भी इनका दुरुपयोग किया जा सकता है।

स्रोत: IE

## रासायनिक हस्ताक्षर अथवा जैवचिह्न

### संदर्भ

- विभिन्न रोगों के निदान को बेहतर बनाने के लिए रासायनिक हस्ताक्षरों अथवा जैवचिह्नों का अध्ययन किया जा रहा है। विशेष रूप से मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करने वाले रोगों के निदान में इनकी उपयोगिता पर ध्यान दिया जा रहा है।

### परिचय

- रासायनिक हस्ताक्षर अथवा जैवचिह्न अणुओं, तत्वों या समस्थानिकों के ऐसे विशिष्ट प्रतिरूप हैं, जिन्हें शरीर में मापा जा सकता है।
- इनके परिणाम किसी रोग की उपस्थिति अथवा शरीर में चल रही किसी अंतर्निहित जैविक प्रक्रिया का संकेत दे सकते हैं।
- इनका पता रक्त, मस्तिष्कमेरु द्रव (CSF) तथा अन्य जैविक नमूनों में लगाया जा सकता है।
- इनकी सहायता से स्पष्ट लक्षण दिखाई देने से पहले ही कुछ रोगों की पहचान करना संभव हो सकता है।

### प्रमुख अनुप्रयोग

- अल्जाइमर रोग:** एमिलॉयड-बीटा और टाउ प्रोटीन, जिनमें फॉस्फोरिलेटेड टाउ (p-tau217) भी शामिल है, अल्जाइमर रोग से जुड़े जैविक परिवर्तनों की पहचान करने में सहायता कर सकते हैं।
- पार्किंसंस रोग:** अल्फा-सिन्यूक्लिन एक ऐसा प्रोटीन है, जिसका अध्ययन पार्किंसंस रोग का पता लगाने और उसे समझने के लिए जैवचिह्न के रूप में किया जा रहा है।
- ऑटोइम्यून एन्सेफलाइटिस:** विशिष्ट प्रतिपिंडों की पहचान से उन मामलों का पता लगाने में सहायता मिल सकती है, जिनमें प्रतिरक्षा तंत्र मस्तिष्क पर हमला करता है।
- कैंसर का पता लगाना:** मेटाबोलाइट्स और प्रोटीन में होने वाले परिवर्तन कुछ प्रकार के कैंसर से जुड़े आणविक प्रतिरूपों की पहचान करने में शोधकर्ताओं की सहायता कर सकते हैं।

स्रोत: TH

## सखारोव पुरस्कार, 2026

### संदर्भ

- यूरोपीय संघ ने अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) को अपना सर्वोच्च मानवाधिकार सम्मान विचार की स्वतंत्रता के लिए सखारोव पुरस्कार प्रदान किया है।
- यह सम्मान ऐसे समय में दिया गया है, जब अमेरिका द्वारा न्यायालय को लक्षित करते हुए प्रतिबंध लगाए जा रहे हैं।

### पुरस्कार के बारे में

- स्थापना:** वर्ष 1988 में।
- नामकरण:** इस पुरस्कार का नाम सोवियत संघ के असंतुष्ट विचारक और नोबेल शांति पुरस्कार विजेता आंद्रेई सखारोव के नाम पर रखा गया है।
- उद्देश्य:** मानवाधिकारों और मौलिक स्वतंत्रताओं की रक्षा करने वाले व्यक्तियों तथा समूहों को सम्मानित करना।

- **विजेताओं का चयन:** अंतिम विजेता अथवा विजेताओं का चयन यूरोपीय संसद की अध्यक्षों के सम्मेलन द्वारा किया जाता है। इसका नेतृत्व यूरोपीय संसद का अध्यक्ष करता है तथा इसमें संसद में प्रतिनिधित्व रखने वाले सभी राजनीतिक समूहों के नेता शामिल होते हैं। इस प्रकार पुरस्कार विजेताओं का चयन व्यापक यूरोपीय प्रतिनिधित्व के आधार पर किया जाता है।
- **पुरस्कार राशि:** 50,000 यूरो।
- **पुरस्कार समारोह:** प्रत्येक वर्ष दिसंबर में फ्रांस के स्ट्रासबर्ग स्थित यूरोपीय संसद में आयोजित किया जाता है।

### क्या आप जानते हैं?

- सखारोव पुरस्कार के कई विजेता, जिनमें नेल्सन मंडेला, मलाला यूसुफजई और वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो शामिल हैं, बाद में नोबेल शांति पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं।

### अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC)

- अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) नीदरलैंड के हेग में स्थित एक अंतरराष्ट्रीय न्यायाधिकरण है। यह संयुक्त राष्ट्र से कानूनी रूप से स्वतंत्र है।

- **स्थापना:** वर्ष 2002 में बहुपक्षीय रोम संविधि के अंतर्गत।
  - ♦ यह अंतरराष्ट्रीय अपराधों के लिए व्यक्तियों पर मुकदमा चलाने के अधिकार क्षेत्र वाला पहला और एकमात्र स्थायी अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय है।
  - ♦ इसके अधिकार क्षेत्र में निम्नलिखित अपराध शामिल हैं:
    - नरसंहार।
    - मानवता के विरुद्ध अपराध।
    - युद्ध अपराध।
    - आक्रामकता का अपराध।
- ICC में वर्तमान में 125 सदस्य राष्ट्र हैं। यूक्रेन हाल में इसमें शामिल होने वाला देश है।

### ICC और ICJ के बीच अंतर

- इस प्रकार, ICC व्यक्तियों की आपराधिक जिम्मेदारी पर केंद्रित है, जबकि ICJ राज्यों के बीच विवादों और अंतरराष्ट्रीय कानून से संबंधित मामलों की सुनवाई करता है।

स्रोत: DW

